Pattern of Rural settlements

1. परिचय :-

ग्रामीण बस्तियों का प्रतिरूप यह दर्शाता है कि गाँवों में मकानों की स्थानिक व्यवस्था किस प्रकार एक-दूसरे से संबंधित है बस्तियों के प्रतिरूप निर्धारण में भौतिक कारकों में - कुएँ, तालाब, पोखर, भूमि की ~~व्यवस्था~~ उपस्थिति अथवा सांस्कृतिक कारकों में - सड़कों, गलियों का ज्यामितिय प्रतिरूप, धार्मिक संस्थाएँ आदि कारकों का निर्णायक भूमिका होती है।

2. ग्रामीण बस्ति के प्रतिरूप :- बस्ति के प्रतिरूप को दो भाग में बाँटकर समझा जा सकता है

- मुख्य प्रतिरूप
  - 1. रेखिक प्रतिरूप
  - 2. अरीय प्रतिरूप
  - 3. आयताकार प्रतिरूप
  - 4. तारे जैसा प्रतिरूप
  - 5. त्रिभुजाकार प्रतिरूप
  - 6. वृत्ताकार एवं अर्द्धवृत्ताकार
  - 7. सीढ़ीनुमा प्रतिरूप
  - 8. नीहारिका प्रतिरूप
  - 9. पंखा प्रतिरूप
- अन्य प्रतिरूप
  - 10. चापाकार प्रतिरूप
  - 11. तीर प्रतिरूप
  - 12. जूते के फीते प्रतिरूप
  - 13. L shaped and T प्रतिरूप
  - 14. बहुरेखीय प्रतिरूप
  - 15. ओवल आकृति प्रतिरूप
  - 16. Strassendorfer
  - 17. पंजा प्रतिरूप
  - 18. खोखला आयताकार प्रतिरूप

Scanned by CamScanner

1. रेखिय प्रतिरूप (Linear pattern) :- इस प्रकार की बस्ति सड़क, नही या नहर के किनारे-किनारे बसे हुए होते है। इन मकानो के द्वार सड़क या नहर की ओर होते है तथा दो मकानो के द्वार परस्पर आमने-सामने होते है गाँव का आकार रेखा की भाँति लम्बी होती है इस प्रकार के गाँव को रिबन प्रतिरूप भी कहते है भारत मे इस प्रकार की बस्ति पूर्वी तटीय मैदान, निम्न गंगा का मैदान, झारखंड मे संथाल प्रदेश आदि मे पाए जाते है

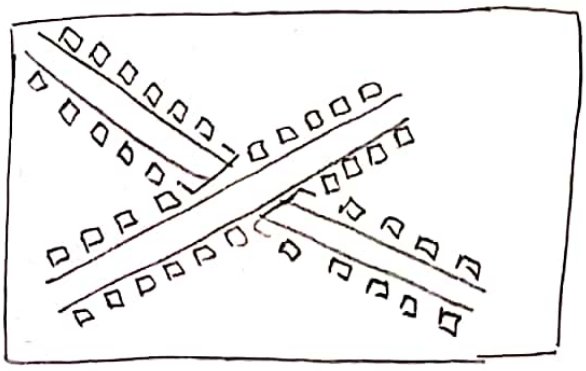

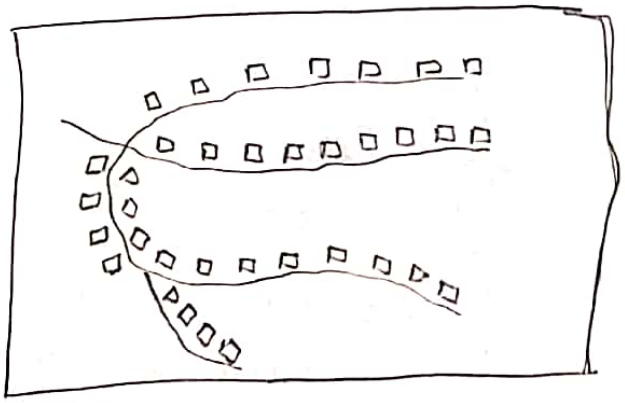

2. अरीय या त्रिज्या प्रतिरूप (Radial pattern) :- भारतीय गाँवो मे यह प्रतिरूप प्रमुख रूप से पाया जाता है इस प्रकार की बस्ति का विकास तब होता है जब कई सड़क मार्गो का मिलन किसी केन्द्रीय स्थान पर होता है इस प्रतिरूप का विकास

Scanned by CamScanner

गाँव के मध्य में बाजार या कुएँ की स्थिति का होना। उदाहरण - तमिलनाडु व ऊपरी गंगा के मैदान, चीन, पाकिस्तान आदि।

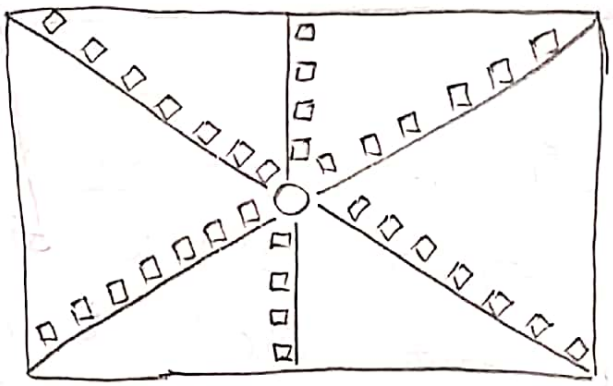

→ अरीय प्रतिरूप

३. आयताकार प्रतिरूप (Rectangular settlement) :-

आयताकार बस्तियों का विकास सामान्यतः शहरी कृषि वाले उत्पादक मैदानों में होता है आयताकार बस्तियों में गलियाँ सीधी होती है और एक-दूसरे को समकोण पर काटती है आयताकार बस्तियों विश्वव्यापी महत्व है भारत में वे प्राचीनकाल के घरोहर है गाँव में ज्यादातर आयतकार अथवा वर्गाकार प्रतिरूप पाए जाते थे इन्हीं वजह से हमारी भूमि की मापन व्यवस्था बीघा है ये भारत के सतलज-गंगा के मैदान में (पंजाब, उत्तरप्रदेश) तथा प्रायद्वीप नदियों के डेल्टा में अनेक गाँव आयताकार रूप के है

Scanned by CamScanner

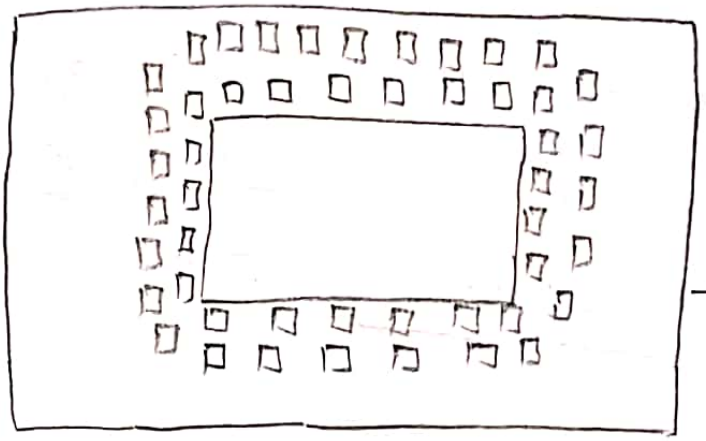

→ आयताकार प्रतिरूप

4. <u>तारे जैसा प्रतिरूप (Star-like pattern)</u> :- ऐसी बस्तियों का विकास उस स्थान पर होता है जहाँ कई सड़के किसी स्थान पर आकर मिलती है तथा चार सभी दिशाओं में सड़क के किनारे फैले हुए होते है। यह प्रतिरूप मुख्यतः उर्वर कृषीय क्षेत्रों में पाए जाते है जहाँ सड़कों का जालक्रम सघन होता है ऐसे बस्ति <u>पंजाब</u> तथा <u>हरियाणा</u> के उर्वरक मैदानों में तथा पश्चिमी <u>उत्तरप्रदेश</u> के ऊपरी <u>गंगा - यमुना</u> दोआब में देखी जा सकती है।

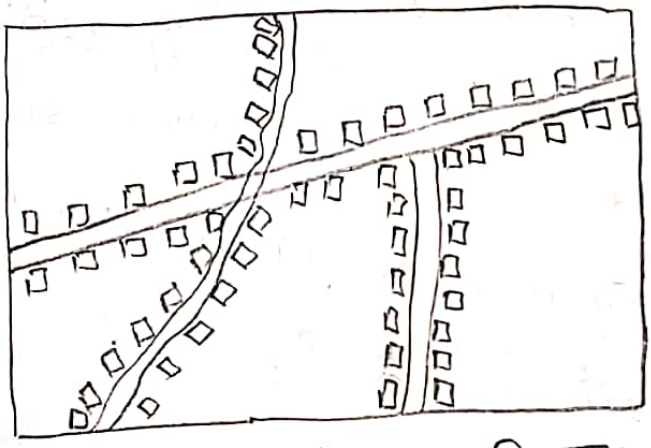

तारे जैसा प्रतिरूप

Scanned by CamScanner

5. त्रिभुजाकार प्रतिरूप (Triangular pattern) :- ग्रामीण बस्तियों का त्रिभुजाकार प्रतिरूप उस स्थान पर विकसित होता है जहाँ नदियों का संगम होता है या जहाँ दो सड़के मिलकर एक त्रिभुज का निर्माण करती है इस संगमपरक्षेत्रों का विस्तार नदियों द्वारा बाधित होता है जिसके फलस्वरूप इस बस्ति का आकार त्रिभुज जैसा होता है पंजाब - हरियाणा में ऐसी बस्तियाँ मिलती है

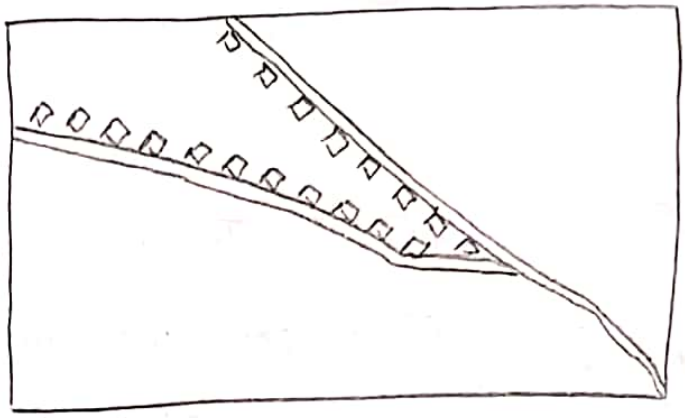

→ त्रिभुजाकार प्रतिरूप

6. वृत्ताकार या अर्द्धवृत्ताकार प्रतिरूप (Circular or semi circular) :-

वृतीय तथा अर्द्धवृतीय प्रतिरूप सामान्यतः किसी तालाब, झील, ज्वालामुखी विवर या समुद्र तट के चारों ओर विकसित होती है चूँकि लोग जल निकाय के नजदीक रहना चाहते है इसलिए वे अपने घरों का तालाब अथवा झील के समीप बनाते है समय के साथ ये बस्तियाँ वृतीय अथवा अर्द्धवृतीय रूप ले लेती है

Scanned by CamScanner

काठियावाड़ तथा कच्छ के दलदल में ऐसी अनेक बस्तियां पायी जाती है जहाँ मछुआरे तथा नमक उत्पादकों के द्वारा ग्रामीण बस्तियों का वृतीय अथवा अर्द्धवृत्तीय प्रतिरूप विकसित किया गया है।

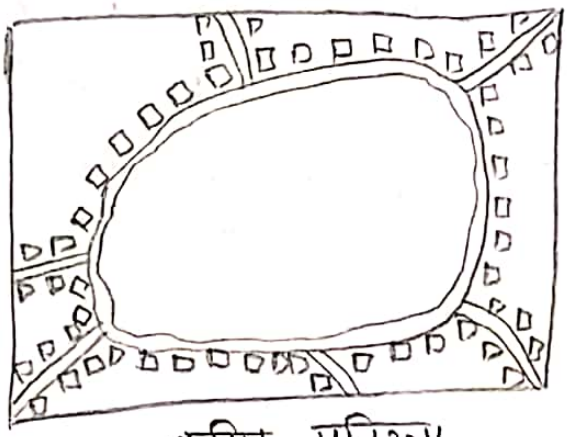

वृतीय प्रतिरूप

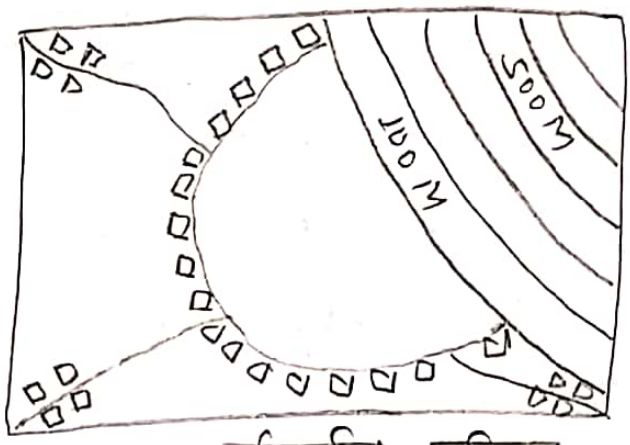

अर्द्धवृत्तीय प्रतिरूप

7. सीढ़ीनुमा प्रतिरूप (Terraced Pattern) :- पर्वतीय क्षेत्रों में कृषक खेती तथा फलोद्यान के लिए सीढ़ीनुमा खेती करते है कृषक इन सीढ़ीनुमा खेतों के निकट ही अपने घरों का निर्माण करते है जिससे पर्वतीय क्षेत्रों में बस्तियों का प्रतिरूप सीढ़ीनुमा आकार का विकसित हो जाता है ऐसी बस्तियां अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, मिजोरम, सिक्किम आदि में देखी जा सकती है

Scanned by CamScanner

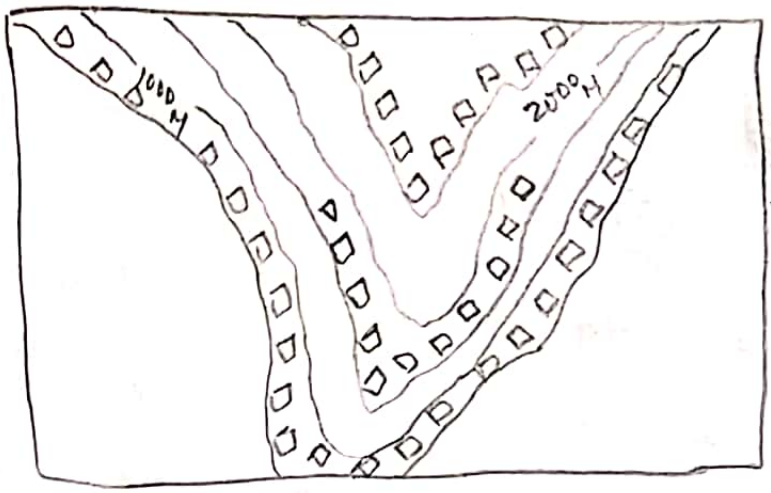

→ सीढ़ीनुमा प्रतिरूप

8. नीहारिका प्रतिरूप (Nebular pattern) :- ऐसी बस्ती में सड़कों की व्यवस्था सामान्यत: वृत्तीय होती है जो गाँव के केन्द्र में आकर समाप्त हो जाती है ये बस्तियाँ किसी टीले पर स्थित होती है तथा सामान्यत: लघु आकार की होती है नीहारिका बस्तियाँ हिमाचल प्रदेश के पहाड़ क्षेत्रों में, जम्मू एवं कश्मीर के कांडी भूमि तथा उत्तराखंड के निम्न हिमालय तथा शिवालिक में पाई जाती हैं ऐसी बस्ती के बीच धार्मिक स्थल होते है और उसके चारों तरफ कई कतारों में मकानों का निर्माण होता है मुख्यत: मुख्य-पूर्व एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्वी एशिया में है

→ नीहारिका प्रतिरूप

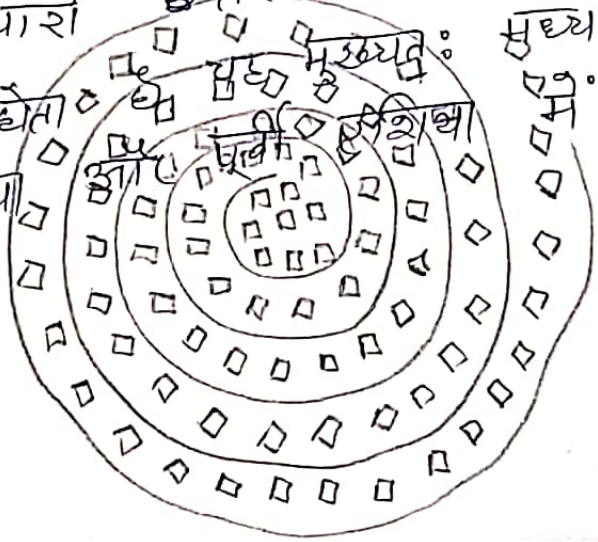

~~निष्कर्ष~~ :-

9. <u>पंखा प्रतिरूप</u> :- इस प्रकार की बस्ति डेल्टाई क्षेत्रों में विकसित होती है। पर्वतपाद प्रदेश में नदियों के वितरिका विकसित होते हैं। कई वितरिकाओं के बीच विकसित होने वाली बस्ती पंखे के समान प्रतीत होती है। गंगा एवं महानदी डेल्टा प्रदेश इस प्रतिरूप के लिए प्रसिद्ध है।

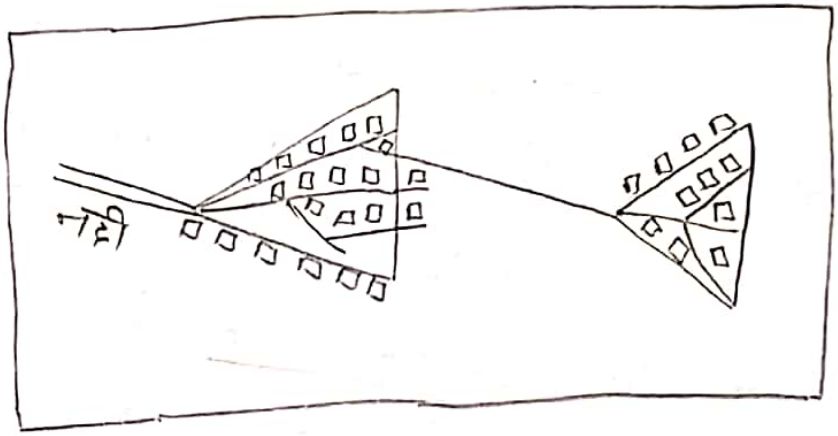

<u>अन्य प्रतिरूप</u>

10. <u>चापाकार प्रतिरूप</u> :- इस प्रकार की बस्तियाँ मुख्यतः पर्वतीय अथवा पहाड़ी क्षेत्रों में विकसित होती हैं। पर्वत या पहाड़ के ढाल पर बस्तियों के विकसित होने से उसका बाह्य प्रतिरूप चापाकार आकृति का हो जाता है। दक्षिण भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में बहुलता से देखी जा सकती है।

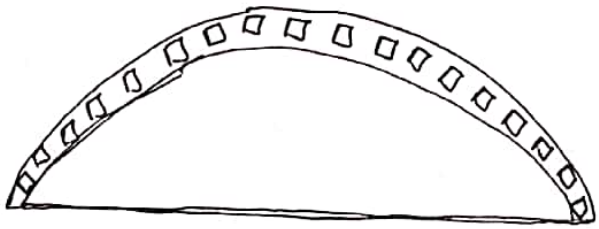

Scanned by CamScanner

11. तीर प्रतिरूप :- इस प्रकार की बस्तियाँ मुख्यतः झील के किनारे अथवा लैगून के किनारे विकसित होती है। जल की सुविधा और परिवहन तथा मछली पकड़ने की सुविधा इस प्रकार की बस्तियों के विकास में सहायक होती है। चिल्का झील प्रदेश में इस प्रकार की बस्ति देखने को मिलती है

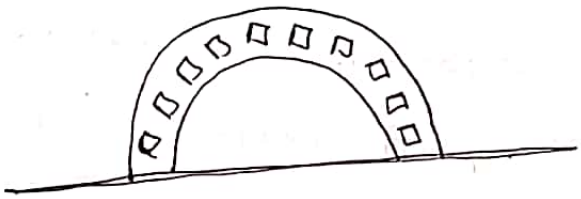

12. जूते के फीते प्रतिरूप :- इस प्रकार की बस्तियाँ बाढ़ के मैदान में देखने को मिलती है। दियारा जैसी बाढ़ मैदान में निक्षेप से बने ऊँचे क्षेत्र विसर्पाकार होते है इसी ऊँचे क्षेत्र पर जब बस्ती विकसित होती है तो वह देखने में जूते के फीते की तरह लगती है। जापान के कछारी मैदान की ग्रामीण बस्तियाँ इस प्रकार विशेषता रखती है।

Scanned by CamScanner

13. L shaped and T shaped प्रतिरूप :- इस प्रकार की बस्ति मूलतः 20 वीं सदी में बसी नवीन बस्ती है इसके विकास का मूल कारण परिवहन का विकास है परिवहन मार्ग तटबंध या नहर के किनारे विकसित होती है नहर अथवा सड़क का मार्ग जहाँ Junction का निर्माण करता है उसी जगह रेखीय प्रारूप की बस्तियाँ L अथवा T आकार विकसित हो जाती है भारत के उत्तरी-पश्चिम मैदान, उत्तरी चीन, अर्जेन्टाइन दक्षिण कोरिया में विकसित होता है

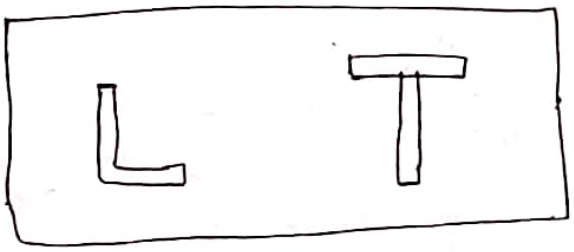

14. बहुरेखीय प्रतिरूप :- इसका विकास बंदरगाह नगरों में होता है जहाँ या तो कई नदियाँ साथ गुजर रही है अथवा किसी राजमार्ग के किनारे दोनों तरफ अधिवास मकानों की कतार एक से अधिक है

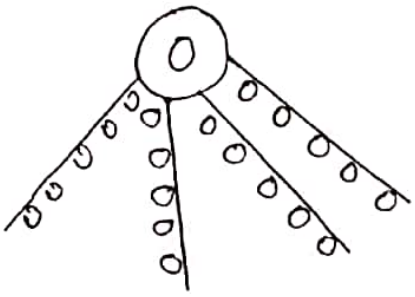

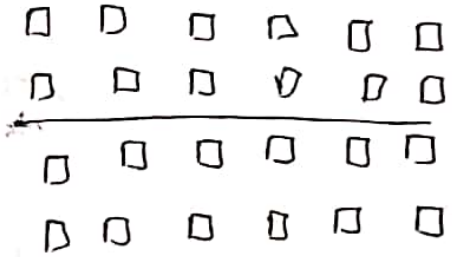

Scanned by CamScanner

15. Oval shaped :- इस प्रकार की बस्ति अंडाकार आकृति की होती है इसमें दो निर्मित क्षेत्र के बीच खुला मैदान होता है निर्मित क्षेत्र में मकान काफी सटे होते है यह बस्तियाँ मवेशियों की सुरक्षा के लिए बहुत विकसित बस्ती होती है क्योंकि बीच में खुले स्थल पर ये बस्ती होता है केन्या, तंजानिया युगांडा खासकर मसाई जनजाति की बस्तियाँ ऐसी है

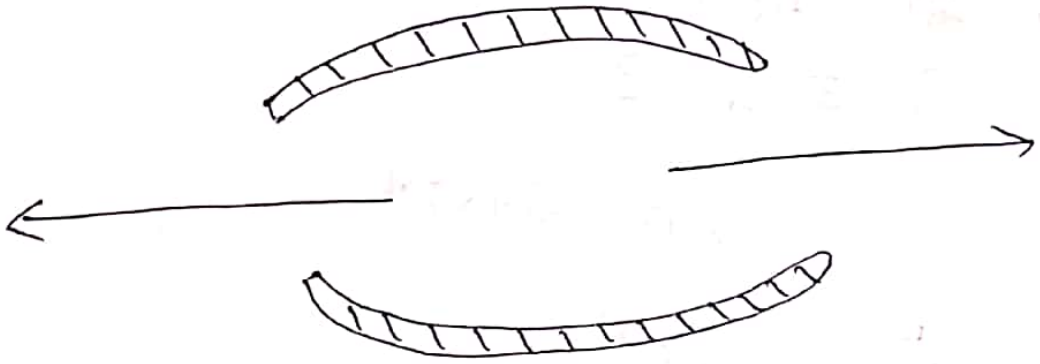

16. Strassendorfer :- इस बस्ती का विकास गाँव को शहर से जोड़ने वाले सड़क के किनारे बन जाने से होता है यह पश्चिम यूरोप एवं जर्मनी की विशेषता है

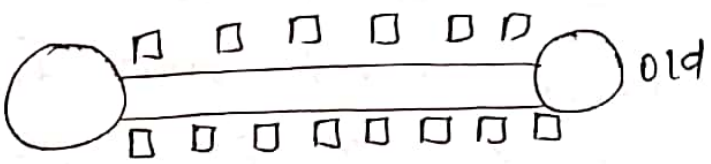

Scanned by CamScanner

17. <u>पंजा प्रतिरूप</u> :- ऐसी बस्तियों का विकास अपरदन क्षेत्रों क्षुद्र नालिका और अवनालिका अपरदन का में विकसित होती है तीव्र तलीय अपरदन का कार्य जब कई रेखाओं में होता है तो बीच की ऊँची भूमि पर ग्रामीण बस्तियाँ विकसित होने लगती है चंबल, बेतवा, और केन नदियों घाटी प्रदेश में इस प्रकार की अनेक बस्तियाँ देखने को मिलती है पश्चिमी चीन में भी इस प्रकार की बस्ति है

:- पंजा प्रतिरूप

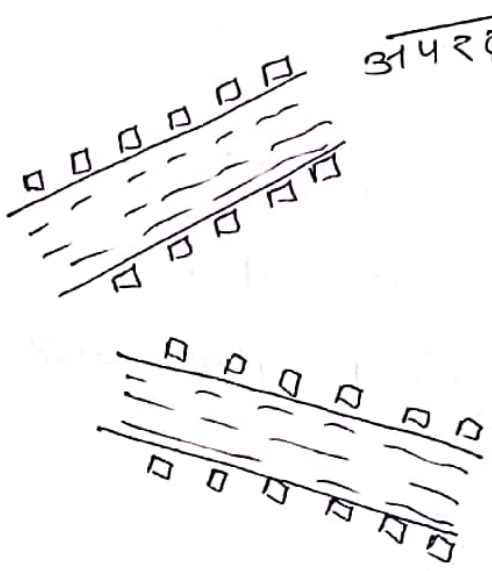

18. <u>खोखला आयताकार प्रतिरूप</u> :- इस प्रकार की बस्तियों का विकास खाली जगह में होता है इस खाली जगह के बीच में मंदिर, मस्जिद या छोटा तालाब हो सकता है खाली जगह के चारों तरफ मकान का विकास होता है। ~~इस प्रकार~~ वह खाली जगह किसी जमींदार या गाँव के प्रभावशाली व्यक्ति

Scanned by CamScanner

की सम्पत्ति होती है। इस प्रकार की बस्ति को मानसूनी प्रदेश की विशेषता है। अरब देशों, मध्य पूर्व के मरुद्यान व बांग्लादेश में भी इस प्रकार की बस्तियाँ पायी जाती है।

निष्कर्ष :-

समग्रतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण आवास के प्रतिरूप पर भौगोलिक कारक का व्यापक प्रभाव पड़ता है। साथ ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने तथा संचार साधनों ने ग्रामीण अधिवास के प्रतिरूप को निर्धारित करने का कार्य किया है।

Scanned by CamScanner